ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

मध्यकालीन कवि रहीम की भक्ति भावना

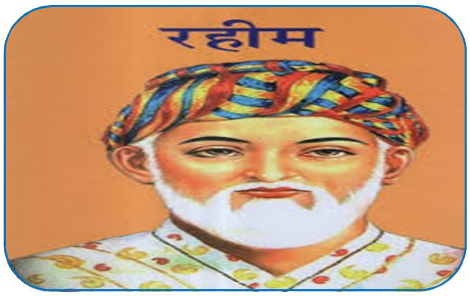

डॉ. आनंद कुमार मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर- हिंदी
प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय , जलालाबाद, शाहजहांपुर .

मध्यकालीन कवि रहीम की भक्ति सूफ़ी प्रेम, सगुण कृष्ण भक्ति और निर्गुण निराकार उपासना का एक अनूठा समन्वय है। मुसलमान होने के बावजूद उन्होंने कृष्ण, राम और शिव की प्रशंसा की और अपनी रचनाओं (मदन्नाष्टक)में हिन्दू पौराणिक कथाओं का उपयोग किया, जो उनकी धार्मिक उदारता और सहिष्णुता को दर्शाता है। रहीम ने मज़हब कई दीवारों से ऊपर उठकर भक्ति की। वे कृष्ण के प्रति समर्पित थे। रहीम के काव्य में भक्ति केवल ईश्वर की स्तुति नहीं है बल्कि वह जीवन के व्यावहारिक सिद्धांतों और नीतिपरक उपदेशों के साथ गुथी हुई है । वे ईश्वर को निराकार मानते हुए भी साकार रूप (राम,कृष्ण) में उनकी लीलाओं का गान करते हैं । अहंकार त्याग को वे ईश्वर प्राप्ति के लिए अनिवार्य मानते हैं। उनकी भक्ति दरबारी संस्कृति के बावजूद लोक-जीवन के अनुभवों पर आधारित है। रहीम की भक्ति और उनका प्रेम उनकी रचनाओं- **रहीम दोहावली, बरवै नायिका भेद, मदन्नाष्टक और रासपंचाध्यायी** आदि में बखूबी दिखाई पड़ता है।

रहीम ने संस्कृत के धर्म ग्रंथो का अध्ययन किया। अपने युग के विद्वान मुसलामानों में संस्कृत का सबसे अधिक ज्ञान रहीम को था। संस्कृत मिश्रित ब्रजभाषा और मालिनी छंद में लिख मदन्नाष्टक रहीम के श्रेष्ठ काव्य रचना है। भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने की उनकी अद्भुत क्षमता थी। उन्हें सात भाषाओं का ज्ञाता माना जाता है। रहीम को काव्य और साहित्य में विशेष रुचि थी। हिंदी कविता के क्षेत्र में रहीम का योगदान अत्यंत सराहनीय है। उनकी लोकप्रियता और काव्य के प्रति रुचि कई प्रशंसा उनके समकालीन कवियों, शायरों और इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से की है। रहीम हमेशा हिंदी भाषी कवियों से घिरे रहते थे। कहा जाता है कि उन्होंने जितना हिंदी के कवियों को पुरष्कृत किया है उसका दसवा हिस्सा भी फ़ारसी कवियों को नहीं किया। कहा जाता है कि पुरष्कृत करने के क्रम में उन्होंने कवि गंग को एक छंद के लिए सर्वाधिक राशि 36 लाख रुपये प्रदान किया था। रहीम कला, सौन्दर्य और काव्य-प्रेम के बड़े प्रशंसक थे। तानसेन के संगीत पर मुग्ध होकर उन्होंने अपना प्रसिद्द दोहा लिखा- “विधना यह जिय जाति कै, सेसहि दिए न कान। धरा मेरु सब डोली है, तानसेन के तान।”

अकबर की आज्ञा से उन्होंने यूरोप की भाषाओं का अच्छा अभ्यास किया था। देशों से पात्र-व्यवहार करने में रहीम की सहायता ली जाती थी। सरकारी पत्र लिखने और अनुवाद करने में रहीम बहुत कुशल थे। कहा जाता है कि इस क्षेत्र में उनसे बड़ा विशेषज्ञ कोई नहीं था।

रहीम मानव धर्म के बहुत बड़े समर्थक थे। धर्म अथवा समुदाय के आधार पर कभी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते थे। यही कारण है कि स्वयं मुसलमान होते हुए भी रहीम की हिन्दू संस्कृति में गहरी आस्था थी। उन्हें हिन्दू रीतिरिवाजों और परम्पराओं के विषय में पूर्ण जानकारी थी। साथ ही हिन्दू धर्म ग्रंथों का गहन अध्ययन भी उन्होंने किया था। इसका प्रभाव उनकी रचनाओं में देखा जाता है। एक भक्त ह्रदय की सम्पूर्ण श्रद्धा और प्रेम के सार्थ उन्होंने अनेक संस्कृत श्लोकों और हिंदी पदों में हिन्दुओं के आराध्य देव श्रीराम और श्रीकृष्ण की आराधना की है। और उन्होंने उनसे सम्बद्ध अनेक प्रसंगों को अपने काव्य में स्थान दिया है। शास्त्रीय घटनाओं और तथ्यों के वर्णन में उनका हिंदुत्व प्रेम झलकता है। यह धार्मिक सहिष्णुता और उदारता निःसंदेह प्रेरक और अनुकरणीय है। उनकी इन्ही विशेषताओं को देखकर दिनकर लिखते हैं- "रहीम ऐसे मुसलमान हुए हैं जो धर्म से मुसलमान और संस्कृति से शुद्ध भारतीय थे।" ऐसे व्यक्तित्व के बारे में बात करते समय बड़ी पीड़ा होती हैं कि सच्चे अर्थ में हिन्दुस्तानी रंग के इस कवि को कोई समुचित आदर नहीं मिला। जायसी को रामचंद्र शुक्ल जैसा समालोचक मिला लेकिन रहीम को कोई सहृदय समालोचक नहीं मिला। रहीम की विशेष प्रसिद्धि उनके नीति विशेषग्य दोहों के कारण है। इनका आधार रहीम का यथार्थ अनुभव है, जिसे उन्होंने पूरी सहृदयता से व्यक्त करने का प्रयास किया है जो ह्रदय को छू लेते हैं।

"रहिमन मन की व्यथा म नहीं राखौ गोय। सुनि अठी लेंहें लोग सब बांटीं लहैं कोय।"

नीति परक दोहों की रचना में हिंदी में कोई दूसरा कवि रहीम की बराबरी नहीं कर सकता। वे हिंदी नीति काव्य के सम्राट हैं। रहीम की नीति परखता उस समय और भी उभे आई थी जब विपन्नावस्था में मित्रों ने भी उनका साथ छोड़ दिया।

"सर सूखे पंछी उड़े, और सरन समहि। दीन मीन बिन पंख के, कहु रहीम कहँ जाहिं।"

रहीम जी कहते हैं कि एकबार प्रेम का जुड़ाव हो जाय तो उसे तोडना नहीं चाहिए, जब प्रेम टूटता है तो फिर मिलता नहीं और मिलता है तो गाँठ पड़ जाती है।

"रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय, टूटे तो फिर न मिले, मिले तो गाँठ पड़ जाय।"

रहीम जैसे व्यवहारिक कवि हिंदी साहित्य में बहुत कम हुए हैं यही कारण है कि उनके दोहे आज भी जन-जन में प्रचलित हैं। अकारण याचकों के लिए आज भी यही कहा जाता है –

"रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ मांगन जाय। उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नायं।"

रहीम का मानना था कि धनहीन व्यक्ति की समाज में बड़ी दुर्दशा होती है इससे वे खुद भी भलीभांति परिचित थे इसीलिए उन्होंने कहा-

"कोउ रहीम जानि काहू के द्वार गए पछिताय। संपत्ति के सब जात हैं, विपत्ति सबै लै जाय।"

रहीम का यह कथन उनकी व्यावहारिक दृष्टि की व्याख्या स्वतः कर देता है। यही कारण था कि अपनी साड़ी संपत्ति बादशाह के द्वारा जप्त करने पर भी वे विचलित नहीं हुए। बल्कि उनका कवित्व और भी प्राणवान हो उठा –

"दूर दिन परे रहीम कह, भूलत सब पहिचानि। सोच नहीं बित-हानि कौ, जौ न होय हित हानि।"

रहीम ने वैयक्तिक एवं लोक जीवन की मार्मिक अनुभूतियों को ही अपने रचनाओं में स्थान दिया है। शायद इसी कारण रहीम अत्यंत लोकप्रिय कवि हैं। इस सम्बन्ध में राम चन्द्र शुक्ल ने स्वीकार किया है कि –"तुलसी के वचनों के सामान रहीम के वचन भी हिंदी भाषी भूभाग में सर्व साधारण के मुंह पर रहते हैं।" उनकी लोकप्रियता के कारणों पर विचार करते हुए प्रसिद्द आलोचक नामवर सिंह का कथन है कि रहीम के दोहों में जीवन के मार्मिक अनुभव भरे हुए हैं। संभवतः इसी कारण रहीम के दोहे जन-जन के कंठहार हैं। उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए डॉ विज्येंदु स्नातक कहते है-"रहीम के उदात्त व्यक्तित्व में एक सच्चे भारतीय का उज्जवल निखर हुआ रूप देख सकते हैं जो जाति-धर्म और वंश के भेदभाव को भुलाकर मानव मात्र को वन्धुत्व के स्तर पर आलिंगन करने वाला मानवता का महान पुजारी है पर दुःख कातर होकर जो अपना सर्वश्व अर्पित करने को सदैव तैयार रहता है, जिसकी काव्य कल्पना धर्म और नीति का ज्ञान कराता हुआ, राग और प्रेम में शास्वत सम्बंधों का परिचायक है।"

रहीम ने अपनी ज़िन्दगी में बहुत उतार-चढाव देखे थे। कभी नबाव, सूबेदार, वकील, सेनापति, कभी कैदी की यातना भोगटा हुआ अ[मानित दरिद्र व्यक्ति कभी बार-बार सम्मानित होते हुए, कभी निजी विडम्बनाओं और विसंगतियों से टूटते हुए रहीम का व्यक्तित्व संघर्षशील रहा है। उन्होंने अपने जीवन में पीड़ा को बड़े सहस और दृढ़ता से झेला और भोगा था।

रहीम के ऐतिहासिक जीवन चरित्र से यह स्पष्ट होता है कि वे बुद्धिमान, प्रतिभा-संपन्न, कार्य कुशल योग्य सेनानायक और असाधारण वीर पुरुष थे। जहाँगीर ने उनकी प्रशंसा में लिखा है- "खानखाना दरबार के बड़े अमीरों में से थे। अकबर के काल में इन्होने बड़े-बड़े कार्य किये, जिनमे तीन प्रमुख हैं- गुजरात की विजय, सुहैल के युद्ध में शत्रुओं को केवल बीस हज़ार सवारों से पराजित करना, सिंध और ठट्ट की विजय।"

रहीम का संवेदनशील एवं सचेतनशील व्यक्तित्व था। कूटनीति और युद्धौन्माद के विषय परिवेश में उनकी संवेदनशीलता को नष्ट नहीं किया था। इससे उनके अनुभव समृद्ध हुए हैं तथा मानव प्रकृति को समझने का अच्छा अवसर मिला है। वे स्वयं रचनाधर्मिता की ओर उन्मुखं हुए ही, साथ ही अकबर के दरबार को कवियों और शायरों का केंद्र बना दिया था। रहीम जन्म से तुर्क होत्र हुए भी पूरी तरह भारतीय थे। भक्त कवियों जैसी उत्कृष्ट भक्ति चेतना, भारतीय और भारतीय परिवेश से गहरा लगाव उनके तुर्क होने के अह्सार को झुत्लाता सा प्रतीत होता है। रहीम दरबारी कवि होने पर भी अभिजात कृत्रिमता से कोसों दूर रहे। वे जन साधारण की पीड़ा को देख कर द्रवीभूत हो उठते हैं। यही कारण है कि तुलसी के बाद जन-जन का प्यार

रहीम को ही प्राप्त हुआ। तुलसी की चौपाईयों की तरह ही रहीम के दोहे भी जनसाधारण की जुबां पर आज तक उसी भाव के साथ रहते हैं।

सहायक ग्रन्थ:-

1- रहीम ग्रंथावली, पृष्ठ-43
2- वाही, पृष्ठ-72
3- आईन- ए –अकबरी, खंड 1, पृष्ठ-332
4- भारतीय संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ-92
5- रहीम ग्रंथावली, पृष्ठ-5
6- अपने-अपने रहीम, हरीश त्रिवेदी
7- रहीम के साहित्य में लोक चेतना, प्रो अखिलेश कुमार दूबे